अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय - * देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का सामान्य परिचय * 1-26

क) जीवन परिचय --

१.१.जन्म ।

१.२ माता-पिता ।

१.३ बचपन ।

१.४ शिक्षा ।

१.५ अर्थोपार्जन ।

१.६ नौकरी ।

१.७ विवाह ।

१.८ अवकाश प्राप्त जीवन ।

ख) व्यक्तित्व की विशेषताएँ --

१.९ ईमानदार एवं स्वाभिमानी ।

१.१० सरलता, सादगी एवं भावुकता ।

१.११ दृढनिश्चयी एवं आत्मविश्वासी ।

१.१२ स्पष्टवादी और मुँहफट ।

१.१३ पुस्तक प्रेमी ।

१.१४ जिंदादिल दोस्त तथा सच्चा मित्र ।

१.१५ मददगार एवं जिम्मेदार गृहस्थ ।

ग) कृतित्व --

१.१६ उपन्यास ।

१.१७ कहानियाँ ।

१.१८ एकांकी ।

१.१९ निबन्ध ।

१.२० कविता ।

१.२१ शोध एवं समीक्षा ।

१.२२ संपादन कार्य ।

निष्कर्ष --

द्वितीय अध्याय • इसीलिए • उपन्यास का वस्तु-विधान • 27-34

२.१ कथावस्तु का आरंभ ।

२.२ कथावस्तु का विकास ।

२.३ कथावस्तु की चरमसीमा (संघर्ष) ।

२.४ कथावस्तु का अवरोह ।

२.५ कथावस्तु अंत की स्थिति ।

निष्कर्ष --

तृतीय अध्याय • इसीलिए उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण • 35-65

अ) पुरुष पात्र --

३.१ मनोरंजन अवस्थी ।

३.२ रघुवंशी ।

३.३ मनोरंजन के पिता ।

३.४ बब्बन ।

३.५ बंडू राव ।

ब) स्त्री - पात्र --

३.६ मीनाक्षी दलाल ।

३.७ चन्द्रा ।

३.८ मनोरंजन की माँ ।

३.९ वर्षा राने ।

निष्कर्ष ---

चतुर्थ अध्याय " इसीलिए " उपन्यास में चित्रित समस्याएँ " 66-96

क) महानगरीय समस्याएँ --

४.१ भौतिक सुविधाओं से संपन्न व्यक्ति की समस्या ।

४.२ महानगर में यौन संबंधी समस्या ।

४.३ महानगर में वेश्या समस्या ।

४.४ महानगर में बीमारियों की समस्या ।

४.५ महानगर में झोपडपट्टी तथा गंदी बस्ती का चित्रण ।

४.६ महानगर में क्लब, होटल तथा बस की भरमार ।

४.७ महानगर में प्रेम की समस्या ।

४.८ महानगर में अन्य समस्याएँ ।

ख) प्रशासनीय समस्याएँ --

४.९ प्रशासन में स्वार्थी वृत्ति ।

४.१० डॉलर तथा धन की समस्या ।

४.११ कानून की समस्या ।

४.१२ भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था ।

ग) आदिवासियों की समस्याएँ --

४.१३ आदिवासियों में मकान का अभाव ।

४.१४ आदिवासियों में मजदूरी की समस्या ।

४.१५ आदिवासियों में कपडों की समस्या ।

४.१६ आदिवासियों में माचिस, तथा बल्ब का अभाव ।

४.१७ आदिवासियों में पेट की समस्या ।

४.१८ आदिवासियों में शिक्षा की समस्या ।

४.१९ आदिवासियों में महाजनी आतंक ।

४.२० आदिवासियों में आर्थिक समस्या ।

निष्कर्ष ---

पंचम अध्याय - 'इसीलिए' उपन्यास में दार्शनिकता 97-105

५.१ दर्शन शब्द की व्युत्पत्ति तथा अर्थ ।
५.२ दर्शन की परिभाषा ।
५.३ दर्शन का क्षेत्र ।
५.४ साहित्य और दार्शनिकता ।
५.५ मार्क्सवादी दार्शनिकता ।
५.६ गाँधीवादी दार्शनिकता ।
५.७ 'इसीलिए' में दार्शनिकता ।

निष्कर्ष ---

106-110

- उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची